

ऋग्वेद मण्डल १, सूक्त ३५, मन्त्र १

वैज्ञानिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण से विस्तृत प्रस्तुति

"गायत्री मन्त्र के देवता सविता हमारे यज्ञ में आ चुके हैं और उनके दो कर्मों का मैं दृष्टा हूँ। उनके और भी गुण कर्म जानने के लिए उनपर आधारित जितने मन्त्र हैं अबसे आगे कुछ दिनों के लिए उन मन्त्रों के अर्थों का प्रचार करेंगे।"

ऋचा (मन्त्र एवं पदपाठ)

हवाम्यग्निं प्रथमं स्वस्तये हवामि मित्रावरुणाविहावसे ।
हवामि रात्रीं जगतो निवेशनीं हवामि देवं सवितारमूतये ॥ १ ॥

पदच्छेदः हवामि । अग्निम् । प्रथमम् । स्वस्तये । हवामि । मित्रावरुणौ । इह । अवसे । हवामि । रात्रीम् । जगतः । निवेशनीम् । हवामि । देवम् ।
सवितारम् । ऊतये ॥ १ ॥

पदार्थ (शब्दार्थ) कोश

शब्द	पारंपरिक एवं वैज्ञानिक अर्थ
हवामि	आह्वान करता हूँ / ग्रहण करता हूँ / समझता हूँ।
अग्निम्	ऊर्जा, अग्नि तत्त्व या प्राण-ऊर्जा को।
प्रथमम्	प्रथम, आदिकालीन या जीवन का मूल निमित्त।
स्वस्तये	उत्तम स्वास्थ्य, सुख और कल्याण के लिए।
मित्रावरुणौ	प्राण और उदान (या संतुलनकारी शक्तियों) को।
इह	इस शरीर रूपी यंत्र या कर्मक्षेत्र में।
अवसे	रक्षा और नियमन के लिए।

रात्रीम्	विश्राम, शीतलन या ऊर्जा-संचयन (Recharge) की अवस्था (रात्रि) को।
जगतः	चराचर जगत या गतिशीलता की।
निवेशनीम्	स्थिरता और विश्राम प्रदान करने वाली।
देवम्	प्रकाशमान या ऊर्जावान तत्त्व को।
सवितारम्	प्रेरक शक्ति, सूर्य या जनन/उत्पत्ति करने वाले ऊर्जा स्रोत को।
ऊतये	क्रिया-सिद्धि, प्रगति और अभिवृद्धि के लिए।

विस्तृत अनुवाद एवं वैज्ञानिक विश्लेषण

१. ऊर्जा एवं ऊष्मीय नियंत्रण (**Agnim - Thermodynamics & Energy**)

मन्त्र अंश: "ह्वयाम्याग्निं प्रथमं स्वस्तये"

पारंपरिक अर्थ: कल्याण के लिए सबसे पहले अग्निदेव का आह्वान करता हूँ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण: भौतिकी (**Physics**) और रसायन विज्ञान के अनुसार, 'अग्नि' का अर्थ केवल यज्ञ की आग नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय ऊर्जा (**Cosmic Energy**) और शरीर की जैव-ऊर्जा (**Bio-energy / Metabolism**) है। जीवन की हर रासायनिक प्रक्रिया (जैसे पाचन और कोशिकीय श्वसन) ऊर्जा पर टिकी है। स्वास्थ्य और कल्याण (स्वस्ति) के लिए इस मूलभूत ऊर्जा का संतुलन अनिवार्य है।

२. श्वसन तंत्र और संतुलन (**Mitravarunau - Respiratory System & Homeostasis**)

मन्त्र अंश: "ह्वयामि मित्रावरुणाविहावसे"

पारंपरिक अर्थ: इस कर्म में रक्षा के लिए मित्र और वरुण का आह्वान करता हूँ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण: शरीर विज्ञान (**Physiology**) के संदर्भ में 'मित्र' और 'वरुण' शरीर की प्राणिक ऊर्जा के दो महत्वपूर्ण घटक हैं — प्राण वायु (अन्तःग्रहण / **Inhalation**) और उदान वायु (ऊर्ध्वगामी ऊर्जा / **Metabolic regulation**)। जैविक होमियोस्टैसिस (**Homeostasis**) या संतुलन बनाए रखने के लिए इन दोनों प्राण-शक्तियों का सही तालमेल जरूरी है।

३. विश्राम, चक्र और पुनरुत्पादन (*Ratrim - Circadian Rhythms & Regeneration*)

मन्त्र अंश: "ह्वयामि रात्रीं जगतो निवेशनीम्"

पारंपरिक अर्थ: संसार को विश्राम देने वाली रात्रि देवी का आह्वान करता हूँ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण: आधुनिक काल-जैविक विज्ञान (*Chronobiology*) और 'सर्काडियन रिदम' (*Circadian Rhythm*) इस बात की पुष्टि करते हैं कि रात्रि या अंधकार का चक्र प्राणियों के शरीर को 'रिचार्ज' करने के लिए आवश्यक है। यह वह अवस्था है जहाँ शरीर की कोशिकाएं अपनी मरम्मत (*Cellular Repair*) करती हैं और मानसिक स्थिरता प्राप्त होती है।

४. सौर ऊर्जा और प्रेरणा शक्ति (*Savitaram - Solar Radiation & Dynamic Force*)

मन्त्र अंश: "ह्वयामि देवं सवितारमृतये"

पारंपरिक अर्थ: क्रिया की सिद्धि के लिए सविता (सूर्य) देव का आह्वान करता हूँ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण: 'सविता' का अर्थ है वह शक्ति जो पूरे ब्रह्मांड को गति, प्रकाश और जीवन देती है (*Solar Power / Photons*)। पृथ्वी पर समस्त जैव-रासायनिक चक्र और ऊर्जा का मूल स्रोत सूर्य की किरणें हैं। किसी भी कार्य की सिद्धि (*Productivity & Action*) के लिए सौर प्रकाश और उससे मिलने वाली ऊर्जा ही आधार बनती है।

निष्कर्ष (Scientific Synthesis)

यह मन्त्र केवल एक धार्मिक प्रार्थना मात्र नहीं है, बल्कि ऊर्जा संरक्षण (*Energy Conservation*), श्वसन तंत्र नियंत्रण (*Respiratory Regulation*), सर्काडियन चक्र (*Biological Clock*), और सौर भौतिकी (*Solar Dynamics*) का एक वैज्ञानिक और दार्शनिक दस्तावेज है। मानव शरीर और ब्रह्मांड की इस समरसता को समझना ही इस मन्त्र का मूल उद्देश्य है।

ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउन्डेशन

प्रस्तोता: आचार्य कपिल यादव

चलभाष (Contact): 8756390767